केन्द्रीय पुरातत्व संग्रहालय, ग्वालियर

निर्देशिका

सँग[illegible] भवन, गूजरी महल (पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दी) १४८६-१५१६

एच. एच. के. कुदेशिया, एम. ए.

केन्द्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय, ग्वालियर
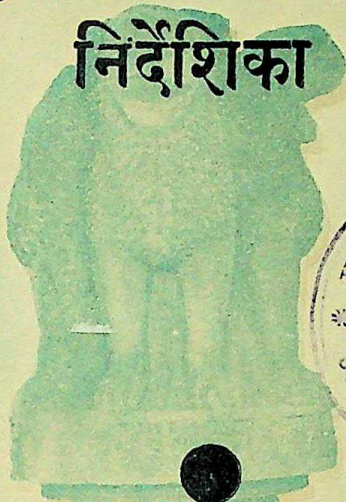
निर्देशिका

द्वारा

एच० एच० के० कुदेशिया, एम० ए०,
संग्रहाध्यक्ष
केन्द्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय, ग्वालियर

प्रकाशक
केन्द्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय,
ग्वालियर

मूल्य ५० नये पैसे

मुद्रक
छपाई-भवन,
ग्वालियर

केन्द्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय, ग्वालियर

निर्देशिका

प्राक्कथन :—

पुरातत्त्व की दृष्टि से ग्वालियर एक विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह दिल्ली से १९५ मील तथा भोपाल से २४५ मील की दूरी पर दिल्ली-बम्बई रेलवे मार्ग पर स्थित है। ग्वालियर दुर्ग के कारण इस नगर की प्रसिद्धि अधिक है। सन् ५२५ ई० से, भारत के इतिहास में इस दुर्ग का निरन्तर उल्लेख मिलता है; किन्तु उपलब्ध प्रमाणों से यह निर्विवाद सिद्ध है कि इस दुर्ग का इतिहास इससे भी अधिक प्राचीन है। इस दुर्ग की स्थापना के सम्बन्ध में अनेक कथाएं प्रचलित हैं।

विभिन्न प्राचीन अभिलेखों में ग्वालियर दुर्ग के अनेक नाम पाये जाते हैं; यथा गोप पर्वत, गोप गिरीन्द्र, गोपाद्रि, गोपगिरि, गोपाचल आदि। पुरातत्त्व की दृष्टि से दुर्ग पर यह स्थान महत्वपूर्ण एवं दर्शनीय है। चतुर्भुज मन्दिर (विष्णु मन्दिर), सास-बहू का मन्दिर (सहस्त्रबाहु का मन्दिर—विष्णु मन्दिर), तेली का मन्दिर (विष्णु मन्दिर)। राजा मानसिंह तोमर द्वारा निर्मित मानमन्दिर, शिल्प सौंदर्य के अप्रतिम प्रतीक इस दुर्ग को अलंकृत किये

हुए हैं। दुर्ग से कुछ दूरी पर संगीत-सम्राट् तानसेन तथा उनके गुरु मुहम्मद गौस के मकबरे बने हुए हैं। ये मुगलकालीन शिल्प के बेजोड़ नमूने माने जाते हैं।

दुर्ग के ग्वालियर-द्वार के समीप गूजरीमहल स्थित है। यह प्रासाद राजा मानसिंह तोमर (१४८६-१५१६) ने अपनी प्रियतमा गूजरी रानी 'मृगनयना' के लिए बनवाया था। इस प्रासाद की गणना तत्कालीन उत्कृष्ट कला-कृतियों में की जाती है। मान मन्दिर के समान इसके सौंदर्य-प्रसाधन में भी रंगीन टाइलों का प्रयोग किया गया है; किन्तु इन टाइलों की शोभा समय के क्रूर हाथों द्वारा अब नष्ट हो चुकी है। ग्वालियर पुरातत्त्व संग्रहालय गूजरीमहल में ही अवस्थित है।

इतिहास:—ग्वालियर राज्य में सन् १९१३ ई० में पुरातत्त्व विभाग आरम्भ किया गया तथा उसी समय से एक पुरातत्त्व संग्रहालय स्थापित करने के आदेश दिए गए। किन्तु उचित भवन के अभाव के कारण संग्रहालय स्थापित नहीं हो सका। गूजरीमहल सन् १९२० ई० में, पुरातत्त्व संग्रहालय स्थापित करने हेतु, स्थानीय पुरातत्त्व विभाग को प्राप्त हुआ था। तदुपरांत आवश्यकतानुसार इस भवन में कुछ परिवर्तन भी किए गए। साथ ही, राज्य के विविध क्षेत्रों से मूर्त्तियां, शिलालेख तथा पुरातत्त्व संबन्धी अन्य सामग्री एकत्र करने और सुव्यवस्थित रूप से संग्रहीत करने का कार्य प्रारम्भ हुआ; और शीघ्र ही मई सन् १९२२ ई० में यह संग्रहालय जनता के लिए खोल दिया गया। तब से यह संग्रहालय अनवरत रूप से उन्नति करता चला आ रहा है। इस संग्रहालय की गणना देश के प्रमुख संग्रहालयों में की जाती है, और मध्य प्रदेश में यह सबसे बड़ा संग्रहालय है।

संग्रहालय खुलने का समय :—

दर्शकों के लिए संग्रहालय के खुलने का समय निम्न प्रकार है :—

१ अप्रैल से ३१ अक्टूबर तक (ग्रीष्मकाल)

प्रातः ७ से १० बजे तक; सायं ३ से ६ बजे तक

१ नवम्बर से ३१ मार्च तक (शरत्काल)

प्रातः ८ से ११ बजे तक; सायं २ से ५ बजे तक

प्रत्येक सोमवार तथा शासकीय अवकाश के दिनों संग्रहालय बन्द रहता है।

गूजरी महल का संक्षिप्त इतिहास :—

इस महल का निर्माण राजा मानसिंह तोमर (१४८६-१५१६) ने अपनी प्रियतमा रानी मृगनयना के लिए कराया था। रानी के गूजर वंश में उत्पन्न होने के कारण यह महल गूजरीमहल के नाम से विख्यात है। कहा जाता है कि एक दिन आखेट में मग्न राजा मानसिंह तोमर राई गांव, जो ग्वालियर के उत्तर-पश्चिम में १७ मील की दूरी पर स्थित है, जा पहुँचा। इसी स्थान पर उसका साक्षात्कार मृग के समान सुन्दर नेत्रों वाली एक रूपवती कन्या से हुआ, जो केवल अपने सौंदर्य ही नहीं वरंच शौर्य के लिए भी गांवभर में प्रसिद्ध थी। उसकी वीरता के विषय में एक दन्तकथा प्रचलित है। राजा मानसिंह ने एक जंगली भैंसे का शिकार किया। वह भैंसा घायल होकर एक खेत में से भाग रहा था, जिसकी रखवाली मृगनयना कर रही थी। भैंसे को आता देख उस किशोरी ने उसके दोनों सींग पकड़ और धक्का देकर पीछे एक खाई में गिरा दिया। उसके साहस और सौंदर्य पर मुग्ध होकर राजा ने उसके प्रणय की याचना की। मृगनयना ने इस शर्त पर राजा से विवाह करना स्वीकार किया कि राई गांव का पानी उसके पीने के लिए ग्वालियर तक लाया जाय। तदनुसार राजा मानसिंह ने राई गांव से ग्वालियर तक मिट्टी का नल बनवाकर पानी लाने का प्रबन्ध किया था। इस नल के अवशेष गूजरीमहल के तलघर तथा उसके पीछे वाली दीवार एवं अन्य स्थानों में आज भी विद्यमान हैं। गूजरी महल की लम्बाई २३२ फुट और

चौड़ाई १६६ फुट है। प्रस्तर-खण्डों पर खोदकर बनवाई गई कलात्मक आकृतियों में समाए हुए नयनाभिराम वर्णविन्यास का वैचित्र्य किन्हीं अंशों में इस समय भी द्रष्टव्य है। प्रासाद के वाह्य भाग में गुम्बदाकार छज्जे लगे हुए हैं। तोरण पर अवस्थित फारसी शिलालेख से प्रतीत होता है कि राजा मानसिंह ने यह महल सन् १४८६ ई०—१५१६ ई० के मध्यवर्ती काल में बनवाया था।

इस संग्रहालय के बाईस सुविशद कक्षों में मूर्त्तियां, शिलालेख, बाघ गुहाओं (गुफाओं) के चित्र-वैभव की अनुलिपियां, कलात्मक शिखर और बेसनगर, उज्जैन, पवाया, महेश्वर आदि स्थानों में उत्खनन से प्राप्त पुराकालीन अवशेष प्रदर्शित किए गए हैं। प्रत्येक कक्ष के द्वार पर, तदन्तर्गत संग्रहीत सामग्री का संक्षिप्त निर्देश देने वाली पट्टिका लगाई गई है।

संग्रहीत सामग्री का ऐतिहासिक मूल्यांकन :—

संग्रहालय में सुरक्षित पुरातत्त्व सामग्री जिन भिन्न-भिन्न स्थानों से प्राप्त हुई है, उनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :—

विदिशा :—अशोक महान् की पट्टमहिषी की जन्मस्थली यह पुरातन नगरी ग्वालियर से लगभग १६४ मील दक्षिण में और गुना से ८७ मील उत्तर में, आगरा-बम्बई रोड से संबद्ध है। भेलसा से २ मील दूर वेत्रवती (वेतवा) तथा बेस नदियों के संगम पर बेसनगर में ईसा से दो शताब्दी पूर्व से लेकर ११वीं शती तक के स्मारक चिह्न बिखरे पड़े हैं। बेस नदी के उत्तर तट पर एक स्तम्भ स्थित है, जो "हेलियोडोरस का स्तम्भ" अथवा जन-साधारण में 'खम्भ बाबा' के नाम से प्रसिद्ध है। स्तम्भ पर प्रकीर्ण लेख से विदित होता है कि तक्षशिला के राजा एन्टीयालसिदास (१५० ई०पू०) के राजदूत हेलियोडोरस ने, जो कि विदिशा के नरेश भागभद्र के समय में आया था, भगवान वासुदेव (विष्णु) के सम्मान में इस

गरुड़ स्तम्भ की स्थापना की, और अपने को 'भागवत' बनाया अर्थात् हिन्दू धर्म में दीक्षित किया था। पुरातत्त्व विभाग द्वारा यहां सन् १९१४ ई० में किए गए उत्खनन के फलस्वरूप बहुत से स्मृति-चिह्न मिले। इनमें से कुछ तो संग्रहालय में लाए गए तथा कुछ भेलसे में डाक बंगले के पास खुले मैदान में रखे गए हैं; जो कि शीघ्र ही विदिशा के नवीन संग्रहालय भवन में प्रदर्शित किए जावेंगे। यहां के स्मृति-चिह्नों में से कुछेक भारतीय संग्रहालय कलकत्ता में तथा ललितकला संग्रहालय, बोस्टन, संयुक्त राज्य अमेरिका में भी रखे हुए हैं।

उदयगिरि:—विदिशा (भेलसा) स्टेशन से ४ मील दूर स्थित पर्वतखण्ड उदयगिरि के नाम से प्रसिद्ध है। इसके पार्श्व को काटकर जिन बीस गुहाओं का निर्माण किया गया है, उनका स्वरूप छोटी-छोटी कोठरियों जैसा है, जो मूर्त्तियों की प्रतिष्ठा के निमित्त बनवाई गई थीं, यद्यपि आज उनमें से अधिकांश विग्रह-विहीन हैं। पहली और बीसवीं गुफाएं जैनों की हैं और शेष १८ हिन्दुओं की प्रतीत होती हैं। पांचवीं गुफा में वराह की विराट् मूर्त्ति है, जिसका रचना-कौशल अपूर्व है। विष्णु (गुफा नं० १३), गुप्तकाल का एक उत्कृष्ट नमूना है। गुहामंडप में उपलब्ध अन्य मूर्त्तियाँ भी तत्कालीन शिल्पियों की सौंदर्यानुभूति एवं कौशल की सजीव उदाहरण हैं। इस स्थान पर गुप्तकालीन (५ वीं शती) संस्कृत के लेख भी प्राप्त हुए हैं।

इसी क्षेत्र के उदयपुर, ग्यारसपुर और बड़ोह नामक स्थान भी पुरातत्त्व की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जहाँ ईसा की नवम शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक के भवन तथा अवशेष पाये जाते हैं।

ग्यारसपुर:—यह स्थान विदिशा से ४० मील दूर ईशान दिशा में है। गाँव के चतुर्दिक अतीत के स्वप्न-वैभव में खोये हुए भग्नावशेषों को देखने से प्रतीत होता है कि मध्य युग में यह एक समृद्धिशाली नगर रहा होगा। यहाँ

पर बौद्ध, ब्राह्मण और जैन —इन तीनों धर्मों का प्रभाव रहा है। यहां के समस्त स्मृति-चिह्न आठवीं शताब्दी के प्रतीत होते हैं। ग्यारसपुर में प्राप्त एक नागरी लिपिबद्ध संस्कृत शिलालेख संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया, जो वि० संवत् ९३६ (ई० सन् १०७९-८०) का है। अभिलेख तीन खण्डों में है। इस शिलालेख में किसी गोवर्द्धन द्वारा विष्णु मन्दिर के, तथा हर्षपुर नगर में चामुंड स्वामी द्वारा निर्मित मन्दिर का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त इस प्रस्तर-लेख में महाकुमार (युवराज) त्रैलोक्यवर्म्मन् के दान का भी उल्लेख किया गया है।

उदयपुरः—विदिशा और बीना रेलवे स्टेशनों के मध्य बारेठ नाम का एक स्टेशन है, जहां से उदयपुर ४ मील के अन्तर पर है। स्टेशन से उदयपुर तक पक्की सड़क है। बासौदा स्टेशन से भी उदयपुर पहुँचा जा सकता है। यहाँ से उदयपुर ८ मील पड़ता है। उदयपुर आज एक छोटा-सा गाँव है, किन्तु किसी समय यह एक समृद्धिशाली नगर रहा होगा। यहाँ पर हिन्दुओं और मुसलमानों के तत्कालीन स्मृति-चिह्न पाये जाते हैं। मन्दिरों की मध्य-कालीन निर्माण-शैली दर्शनीय है।

बड़ोहः—दिल्ली-बम्बई रेलवे मार्ग पर कुल्हार स्टेशन से १२ मील दूर एक ग्राम है, जिसे बड़ोह कहते हैं। यात्रियों को लगभग २ मील कच्चा और शेष पक्का मार्ग तै कर यहाँ पहुँचना पड़ता है। गाँव के दक्षिण में एक तालाब के किनारे मन्दिरों के भग्नावशेष इस स्थान की प्राचीन समृद्धि के साक्षी हैं। बड़ोह का प्राचीन नाम 'बादनगर' या 'कटारा' बताया जाता है, किन्तु इसका ऐतिहासिक उल्लेख अप्राप्य है। पुरातत्व की दृष्टि से इस स्थान का बड़ा महत्व है। यहाँ पर जैन तथा हिन्दुओं के स्मृति-चिह्न हैं। शिलाओं पर उत्कीर्ण मूर्त्तियों में प्राचीन शिल्प-कौशल के भव्य दर्शन होते हैं।

बाघः—अपने अप्रतिम चित्र-वैभव के लिए प्रसिद्ध यह स्थान धार जिले में ग्वालियर से ४९० मील दूर स्थित है, और मालवा का एक प्रसिद्ध पर्यटन-

स्थल है। अजन्ता की गुफाओं के सदृश बाघ की गुफाएं भी भव्य, कलापूर्ण, चित्ताकर्षक एवं सुन्दर हैं। ये विन्ध्य की दक्षिण तलहटी में हैं। इनके समीप बाघ नाम का गाँव है, और इसी कारण इन गुफाओं का नाम 'बाघ की गुफाएं' पड़ गया है। चट्टान के जिस पार्श्व में गुफाएं खोदी गई हैं, उनमें से अनेक तो बाघ नदी के तल से १५० फुट ऊंची हैं। लगभग ७५० गज के विस्तार में फैली हुई इन गुफाओं की संख्या ९ है। इनका निर्माण-काल चौथी शताब्दी से ७ वीं शताब्दी तक माना जाता है। यहाँ की चित्रकारी की कुछ प्रतिलिपियां संग्रहालय में देखी जा सकती हैं। बाघ और अजन्ता की गुफाओं के चित्रों का अन्तर स्पष्ट परिलक्षित होता है। सौंदर्य और सज्जा की दृष्टि से बाघ का चित्र-वैभव अतीव आकर्षक हैं। चौथी तथा पाँचवीं गुफाओं की चित्रकला तो अजन्ता से भी उत्कृष्ट है। यह सारंनाथ (सारनाथ) के धम्म स्तूप का स्मरण कराती है।

उज्जैन:—मालव का यह सुप्रसिद्ध स्थान भारत के पवित्र तीर्थस्थानों में गणनीय कल-कलनिनादिनी क्षिप्रा के तट प्रांत में अवस्थित उज्जैन अथवा उज्जयिनी के ध्वंसावशेष आधुनिक नगर से एक मील दूर देखे जा सकते हैं, जो पुरातत्त्व एवं इतिहास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। प्राचीन काल में यह नगरी विद्या और संस्कृति की केन्द्र रही है। विभाग द्वारा नगर के उत्तर में कतिपय स्थानों में उत्खनन-कार्य कराया गया था, जिसके फलस्वरूप आहत मुद्राएं तथा अन्य महत्वपूर्ण वस्तुएं प्राप्त हुई, जो संग्रहालय की उत्खनन वीथी में प्रदर्शित हैं।

मन्दसौर:—इसका प्राचीन नाम दशपुर था। यहाँ पर प्राप्त एक संस्कृत शिलालेख में भी इस स्थान को दशपुर के नाम से ही सूचित किया गया है। यहाँ पर गुप्तकाल (४०० से ६०० ई०) के अनेक मन्दिर, स्तूप, विहार, बाग तथा कूप हैं, जिनके अवशेष अनुपम, कलापूर्ण और सुन्दर हैं, जिनमें

तोरण-स्तम्भ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस स्तम्भ पर उत्कीर्ण एक लेख में राजा यशोधर्मन द्वारा क्रूर हूण सरदार पर प्राप्त की गई विजय का उल्लेख है। मन्दसौर के तीन गुप्तकालीन शिलालेख संग्रहालय में प्रदर्शित किये गये हैं:—

(१) मन्दसौर खण्डित प्रस्तर-लेख (मालव संवत् ५२४) ई० सन् ४६७-६८ का है। पंक्तियाँ ६, लिपि गुप्त, भाषा संस्कृत। जयवर्मन् के पौत्र, सिंहवर्मन् के पुत्र नरवर्मन् और दशपुर नगर का उल्लेख है।

(२) मन्दसौर प्रस्तर-लेख (मालव संवत् ४९३) ई० सन् ४३६-३७ व ४७२-७३ का है। पंक्तियाँ २४, लिपि गुप्त, भाषा संस्कृत। कुमारगुप्त (प्रथम) तथा उसकी ओर से नियुक्त दशपुर के शासक विश्ववर्मन के पुत्र बन्धुवर्मन् का उल्लेख है। इसमें लाट (गुजरात) के बुनकरों का दशपुर (मन्दसौर) आकर सूर्य-मन्दिर के निर्माण का भी उल्लेख है।

(३) मन्दसौर प्रस्तर-लेख (मालव संवत् ५२४) ई० सन् ४६७-६८ का है। पंक्तियाँ १५, लिपि गुप्त, भाषा संस्कृत। प्रभाकर के सेनाधिप दत्तभट द्वारा कूप, स्तूप, प्याऊ, उद्यान आदि के निर्माण का उल्लेख है।

ग्वालियर:—ग्वालियर क्षेत्र का सर्वाधिक प्राचीन स्थान पवाया अथवा पुरातन पद्मावती है, जो ग्वालियर से लगभग ४५ मील और डबरा से लगभग १३ मील दूर सिन्धु और पार्वती नदियों के संगम पर स्थित है। यह प्रथम शताब्दी से चौथी शताब्दी तक नाग राजाओं की राजधानी था। महाकवि भवभूति ने अपनी अमर कृति 'मालती-माधव' की लीलास्थली के रूप में पद्मावती का विशद वर्णन किया है। यहाँ दूसरी शताब्दी से ८ वीं शताब्दी तक के प्राचीन खण्डहर बिखरे पड़े हैं। ईंटों के द्वारा बनाए गए एक विशाल मन्दिर का चबूतरा, जो खुदाई में निकला था, देखने योग्य है। यहाँ पर नाग

राजाओं की मुद्राएं और मूर्त्तियां तथा मृण्मूर्त्तियाँ मिली हैं, जो संग्रहालय की उत्खनन-वीथी में प्रदर्शित हैं।

तुमेनः—वेस्टर्न रेलवे के बीना-कोटा सेक्शन पर टकनेरी (पछार) स्टेशन है। यहाँ से आग्नेय दिशा में बैलगाड़ी से ६ मील का रास्ता पार करने पर तुमेन गाँव पड़ता है। यह एक छोटा-सा गाँव है। इसका प्राचीन नाम तुम्बवन था। गाँव के पास यज्ञ और बलिदान की भूमि है। चट्टानों को काटकर गुफाएं बनाई गई हैं, जिनमें से दो-तीन आज भी शेष हैं। ये गुफाएं पाँचवीं शताब्दी से १२ वीं शती तक के स्थापत्य और शिल्पकला के उत्तम उदाहरण हैं। यहाँ का एक शिलालेख संग्रहालय में रखा है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

तुमेन (गुना) प्रस्तर-लेख (गुप्त संवत् ११६) ई० सन् ४३५-३६ का है। पंक्तियाँ ६, लिपि गुप्त, भाषा संस्कृत। कुमारगुप्त के शासनकाल में एक मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। इसमें तुम्बवन (तुमेन) और वटोदक (वदोह) का उल्लेख है। यह लेख तुमेन की एक मस्जिद के खण्डहर में प्राप्त हुआ है। इस अभिलेख का ऐतिहासिक महत्व यह है कि उसमें घटोत्कच गुप्त का स्पष्ट उल्लेख है। इसके पूर्व घटोत्कच गुप्त का उल्लेख केवल दो स्थलों पर मिलता था : एक तो बसाढ की एक मुद्रा पर, जिसमें लिखा है श्री घटोत्कच गुप्तस्य, और सेन्टपीटर्सबर्ग के संग्रह में सुरक्षित एक मुद्रा में, जिसमें कुमारादित्य विरुद दिया हुआ है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि घटोत्कच गुप्त सम्भवतः कुमारगुप्त के पुत्र अथवा छोटे भाई थे, जो उनके शासनकाल में प्रान्त के अधिपति थे।

ग्वालियरः—ग्वालियर का प्रमुख प्राचीन स्थान ग्वालियर दुर्ग है। इसका इतिहास ईसा की ६ ठीं शताब्दी से प्रारम्भ होता है; किन्तु ग्वालियर दुर्ग का अस्तित्व इससे भी अधिक प्राचीन पाया जाता है। जिससे कि इसका

ईसा के पूर्व का माना जा सकता है। ग्वालियर दुर्ग के शिलालेख, मूर्त्तियाँ आदि अनेक स्मृति-चिह्न संग्रहालय में रखे हुए हैं। एक प्रदर्शित शिलालेख का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

ग्वालियर (गिर्द) प्रस्तर-लेख (ईसा की ९ वीं शताब्दी) का है। पंक्तियाँ ७, लिपि पुरानी नागरी, भाषा संस्कृत। जो दो टुकड़े मिले हैं, उनमें यह लेख पूरा नहीं हुआ है। अतएव इसका आशय पूर्णरूपेण ग्रहण नहीं किया जा सकता। प्रारम्भिक श्लोक में विशाख (स्कंद) देव की वन्दना की गई है, जिससे प्रतीत होता है कि यह लेख संभवतः विशाख देव के मन्दिर के निर्माण अथवा तन्निमित्त जीविका-दान करने के उपलक्ष में प्रतिष्ठित किया गया होगा। इसमें कन्नौज के राजा रामदेव और उनके ब्राह्मण अधिकारी वाइल्लाभट्ट का उल्लेख है।

पर्यटकों की सुविधा की दृष्टि से संग्रहालय की व्यवस्था विविध दीर्घाओं के रूप में की गई है, जिनका संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है:—

शिलालेख दीर्घा:—

संग्रहालय में प्रवेश करते ही प्रथम कक्ष में शिलालेखों का प्रदर्शन किया गया है। इस संग्रहालय में लगभग ५० शिलालेख हैं, जो कि पहले तथा २६ वें कक्ष में प्रदर्शित किए गए हैं। प्रदर्शित शिलालेख प्राचीन ब्राह्मी, गुप्त, संस्कृत, देवनागरी तथा फारसी लिपियों में हैं। इन शिलालेखों में से कुछ बड़े महत्व के हैं और मध्य प्रदेश के इतिहास पर सारगर्भित प्रकाश डालते हैं। प्रथम कक्ष में कुछ शिलालेखों के छापे भी प्रदर्शित किए गए हैं। ये छापे उन शिलालेखों के हैं, जो किसी कारणवश संग्रहालय में नहीं लाए जा सके हैं। प्राचीन ब्राह्मी लिपि से आधुनिक देवनागरी लिपि की उत्क्रांति बताने वाला एक मानचित्र भी प्रदर्शित है; जिसके देखने से ज्ञात

होता है कि नागरी लिपि का विकास किस प्रकार हुआ। शिलालेख दीर्घा नं० १ तथा २७ में प्रदर्शित प्रमुख शिलालेखों का परिचय नीचे दिया जा रहा है:—

बड़ोदी (शिवपुरी):—यह शिलालेख (वि० संवत् १३३६) ई० सन् १२७६-८० का है। पंक्तियाँ २६, लिपि प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। आसल्लदेव के पुत्र यज्वपाल गोपालदेव (नरवर के राजा) के समय में बावड़ी के निर्माण का उल्लेख। यह एक प्रशस्ति है, जिसमें आसल्लदेव के प्रधान मंत्री गुणधर वंशीय चलिया द्वारा विटपत्र (वर्तमान बूढ़ी बडौद) नामक ग्राम में बावड़ी निर्माण का उल्लेख है। इसमें नलपुर (नरवर) के जाज्वपेल्ल (जयपाल) राजाओं का वंश-वृक्ष दिया हुआ है।

सुरवाया (शिवपुरी):—यह शिलालेख (वि० संवत् १३४१) ई० सन् १२८४ का है। पंक्तियां २५, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। सरस्वती-पट्टन (सुरवाया) के सारस्वत ब्राह्मण ईश्वर द्वारा कूप-निर्माण का उल्लेख। यह सुरवाया किले के उत्तर की ओर डबिया बावड़ी में मिला था।

उदयपुर (विदिशा):—प्रस्तर-लेख, ईसा की ११ वीं शताब्दी की नागरी, भाषा संस्कृत। लेख का आशय है कि राजा उदयादित्य ने उदयपुर बसाकर उसका शासन जिस घराने को सौंपा था, उसी घराने के एक पुरुष दामोदर ने शिवालय बनवाया। दो शिलाओं में यह लेख पूरा हुआ है। इसके एक भाग से पुरातत्त्वविद, उदयपुर प्रशस्ति के नाम से ई० स० १८८२ से परिचित हैं। दूसरा भाग हाल ही में मिला है। इसमें आरंभ से लेकर राजा उदयादित्य तक प्रामाणिक रूप से दी हुई है; इसलिए यह लेख ऐतिहासिक महत्व का है।

चन्देरी (गुना):—प्रस्तरलेख (हिजरी सन् ९१८ ई०) सन्

१५१२ का है। लिपि नस्ख, भाषा फारसी। मांडू के सुल्तान महमूदशाह खिलजी के समय में एक तालाब के निर्माण का उल्लेख है।

शिखर दीर्घा :—

शिलालेखों का अवलोकन कर जब हम दूसरे कक्ष में प्रवेश करते हैं, तो भिन्न-भिन्न कालों के स्तम्भ-शीर्षों के दर्शन होते हैं। प्राचीन काल में प्रथा थी कि स्तूपों और मन्दिरों के प्रांगण में स्तम्भों की रचना की जाती थी, जिनके शीर्ष भाग 'शिखर' कहलाते हैं। संग्रहालय में संगृहीत शिखर सूर्य, गरुड़, मत्स्य, ताड़ तथा सिंह के आकार के हैं। एक शिखर चतुर्मुखी सिंह के आकार का भी है, जो ५वीं शताब्दी का है। यह उदयगिरि से लाया गया है। आकार प्रकार में यह अशोक-स्तम्भ के समान है; केवल इतना अन्तर है कि इसमें सिंह प्रतिमाओं के अधोभाग में राशियां अंकित की गई हैं। ताड़ शिखर पवाया नामक स्थान से लाया गया है, तथा गुप्तकाल का है। इसको देखकर तत्कालीन शिल्पियों के कला-नैपुण्य की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता। इस प्रकार का शिखर अन्यत्र सुलभ नहीं है। इस पर एक प्राणी की कलाकृति है, जिसे देखकर यह प्रतीत होता है कि संभवतः यह नान्दी होगा; किन्तु निर्विवाद रूप से इस विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता।

चित्र दीर्घा :—

तीसरे कक्ष में चित्र, धातु की प्रतिमाएं, ताम्रलेख, छोटे-बड़े फोटो-चित्र आदि प्रदर्शित किए गए हैं।

कुछ वास्तविक चित्र संग्रहालय में नहीं लाए जा सके, इस कारण उन चित्रों की अनुलिपियां प्रदर्शित की गई हैं। ये चित्र अधिकतर मुगल सम्राटों के हैं। प्रदर्शित चित्र फारसी कलम, मुगल कलम, राजपूत कलम, कांगड़ा कलम, ग्वालियर कलम तथा पहाड़ी कलम आदि विभिन्न शैलियों के हैं।

फारसी कलम में चित्रित चंगेज खां का चित्र अद्भुत है। चंगेज खां चित्र देश के एक-दो संग्रहालयों में पाया जाता है। राजपूत शैली में बाजबहादुर तथा रूपमती का चित्र भी अतीव आकर्षक है। बाजबहादुर मांडू का सुल्तान था और रूपमती उनकी प्रियतमा। रूपमती संगीत में अधिक रुचि रखती थी। बाजबहादुर के प्रति अपने जीवनांत प्रेम के कारण रूपमती को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। अश्वारूढ़ महारानी लक्ष्मीबाई तथा तात्याटोपे का चित्र, जो इस दीर्घा में प्रदर्शित है, प्रामाणिक माना जाता है।

इसी दीर्घा में धातु की प्रतिमाएं हैं। ये प्रतिमाएं विभिन्न स्थानों से क्रय की गई हैं। इनमें पंचमुखी गणेश तथा तांडव नृत्य करते हुए शिव, शेष-शायी विष्णु तथा उपदेश मुद्रा में महात्मा बुद्ध की प्रतिमाएं अधिक कलापूर्ण हैं। पुरातत्त्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रमुख स्थानों के फोटो-चित्र भी प्रदर्शित किए गए हैं। इसी कक्ष में, विभागीय प्रकाशनों के विक्रय की भी व्यवस्था की गई है।

बाघ-गुहाओं के चित्र :—

बाघ गुहाओं के चित्र-वैभव का संक्षिप्त परिचय पूर्व पंक्तियों में दिया जा चुका है। नयनाभिराम चित्रों की सर्वश्री नन्दलाल बोस, भांड, आप्टे, एहमद प्रभृति सिद्धहस्त चित्रकारों द्वारा प्रस्तुत अनुलिपियों का प्रदर्शन इस दीर्घा में किया गया है। योरोपियन कलाकार श्री कचदोरियन ने भी अनेक चित्रों की प्रतिलिपियां तैयार की हैं। उनकी प्रतिलिपियों का वर्ण-विन्यास मूल चित्रों से कुछ भिन्न है। इन चित्रों के ऊपर बाघ गुहाओं के बड़े फोटो-चित्र लगे हुए हैं, जिन्हें देखकर बाघ गुफाओं की पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

प्रतिमाओं की दीर्घा :—

पांचवें से लेकर ग्यारहवें कक्ष तक में प्रतिमाएं प्रदर्शित की गई हैं। पांचवें कक्ष में यक्षमणिभद्र की प्रतिमा विशेष दर्शनीय है। यह प्रतिमा ईसा

की प्रथम शताब्दी की है तथा पवाया नामक स्थान से प्राप्त हुई है। इस प्रतिमा के नीचे गुप्तलिपि में एक लेख है; जिससे विदित होता है कि स्वर्णकार संघ ने इस प्रतिमा की स्थापना स्वामि शिवनन्दी राजा के काल में की थी। शिवनन्दी राजा के राज्यकाल का कोई इतिहास प्राप्त नहीं हुआ है। इसी प्रकार एक यक्षिणी की प्रतिमा ई० पू० दूसरी शताब्दी की है, जिसमें दो वेणियों का केश-विन्यास देखने योग्य है। छठे कक्ष में प्रदर्शित षट्भुजा पार्वती की विशाल मूर्ति का नाम महिषमर्दिनी है। पार्वती के चरणों द्वारा विमर्दित महिषासुर के शिर में से निकलता हुआ एक मनुष्य का आकार दर्शाया गया है। सातवें कक्ष में एक गुप्तकालीन सरदल प्रदर्शित किया गया है, जो पवाया नामक स्थान से लाया गया है। इसमें एक ओर संगीत तथा नृत्य का तथा दूसरी ओर राजा बलि के यज्ञ तथा उसके द्वारा वामन भगवान् को दिये गये दान का दृश्य है। दान प्राप्त करने के उपरांत विष्णु भगवान त्रिविक्रम का रूप धारण कर तीन पग में विस्तार पूर्वक तीनों लोकों को नापते हुए दिखाए गए हैं। नवें कक्ष में गंगा, नागराजा तथा योगिनी की प्रतिमाएं मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। दसवें कक्ष में संग्रहीत सभी प्रतिमाएं सुन्दर हैं; किन्तु रानी और राजपुत्र की प्रतिमा विशेष-रूपेण दृष्टव्य है। यह प्रतिमा बड़ोह नामक स्थान से लाई गई है तथा मध्यकालीन है। कतिपय विद्वान् इस प्रतिमा को यशोदा एवं कृष्ण की तथा कुछ यशोधरा तथा राहुल अथवा महात्मा बुद्ध एवं उनकी माता मायादेवी की मानते हैं। वस्तुतः यह किनकी है, इसका अन्तिम निर्णय होना शेष है।

ग्यारहवें कक्ष के मध्य में भगवान् वराह की प्रतिमा है, जिसके पृष्ठ भाग पर विष्णु के समस्त अवतार तथा अन्य हिन्दू देवताओं की प्रतिमाएं अंकित हैं। इस कक्ष में सर्वाधिक कलापूर्ण प्रतिमा ग्यारसपुर नामक स्थान से प्राप्त वृक्षिका की है। इस प्रतिमा की जो भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। इस कलाकृति को देखने से प्रतीत होता है कि इसके निर्माण में कलाकार ने अपने समस्त कौशल का उपयोग कर डाला है।

फोटो-चित्र दीर्घा :—

बारहवें तथा तेरहवें कक्षों में पुरातत्त्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थानों के फोटोचित्र प्रदर्शित किए गए हैं।

उत्खनन सामग्री दीर्घा :—

चौदहवें कक्ष के समक्ष चक्रव्यूह तथा एम्फीथियेटर (रंगभूमि) के दृश्य प्रदर्शित किए गए हैं। चक्र-व्यूह गोहद नामक स्थान से लाया गया है। कक्ष के भीतर उत्खनन द्वारा प्राप्त सामग्री प्रदर्शित की गई है। इस दीर्घा में विदिशा, महेश्वर, उज्जैन, मोहन-जो-दड़ो, पवाया तथा इन्द्रगढ़ आदि स्थानों में किए गए उत्खनन में प्राप्त वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। सन् १६१४ ई० में विदिशा में विभाग द्वारा किए गए उत्खनन में प्राप्त आहत मुद्राएं, मृत्तिकापात्र, मोती और मृण्मुद्राएं प्राप्त हुई हैं। उनमें से एक सील पर 'हाये-हस्ती' अर्थात् "गजशालाध्यक्ष" अंकित है। यह राजकीय सील प्रतीत होती है। दूसरी सील पर 'हुवीला' लिखा हुआ है, जो किसी व्यक्ति विशेष की है।

पवाया अथवा प्राचीन पद्मावती का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। पद्मावती नागवंश के राजाओं की राजधानी थी। पुराणों से सिद्ध है कि नागराजा पद्मावती, कान्तिपुरी तथा मथुरा में राज्य करते थे; यथा—

"नव नागाः मथुरायां कान्तिपुर्यां पद्मावत्याम्"

इस स्थान पर भी विभाग द्वारा चार बार उत्खनन कार्य किया गया, जिसके परिणामस्वरूप नाग राजाओं के सिक्के, मृण्मूर्त्तियां तथा अन्य वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। पवाया की मृण्मूर्त्तियां, कौसाम्बी की मृण्मूर्त्तियों के समान हैं। केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग, भारत सरकार द्वारा मोहन-जो-दड़ो में किए गए उत्खनन-कार्य में प्राप्त सामग्री को देश के मुख्य-मुख्य संग्रहालयों में भेज दिया

गया था। इस सामग्री को देखने से तत्कालीन सभ्यता का परिचय मिलता है। उज्जैन के उत्खननों में प्राप्त वस्तुओं में कानों के आभूषण, काले पॉलिश किए हुए प्रस्तर खण्ड के हैं, जिनकी पॉलिश देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि वह आधुनिक काल में की गई हो। यहां पर मिले मिट्टी के बरतन मोहन-जो-दड़ो के मिट्टी के बरतनों से मिलते-जुलते हैं। उनको देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों स्थानों की सभ्यता एक जैसी रही होगी। इन्द्रगढ़ में भी गुप्त-कालीन प्रतिमाएं जो मिली हैं, कि भानपुरा संग्रहालय में रखी हुई हैं। इन्द्रगढ़ की कुछ सामग्री गूजरीमहल में भी प्रदर्शित की गई है।

जैन मूर्त्तियों की दीर्घा :—

बीसवें कक्ष में जैन प्रतिमाएं प्रदर्शित की गई हैं। अधिकतर जैन प्रतिमाएं मध्यकाल की हैं। ग्वालियर दुर्ग की अधिकांश अन्य जैन प्रतिमाएं इसी काल की हैं। जैन मत दो सम्प्रदायों में विभक्त है:—(१) दिगम्बर (२) श्वेताम्बर। श्वेताम्बर संप्रदाय की मूर्त्तियां श्वेत वस्त्र धारण किए हुए हैं। किन्तु दिगम्बर मतानुयायियों की मूर्तियां नग्न हैं। इन प्रतिमाओं के अलग-अलग चिह्न होते हैं, जैसे पार्श्वनाथ का चिन्ह शेषनाग होता है, ऋषभदेव का चिन्ह नान्दी होता है, अजितनाथ का चिन्ह हाथी रहता है, चन्द्रप्रभा का चन्द्र तथा नेमिनाथ का शंख होता है। किन्तु बहुत-सी प्रतिमाओं पर कोई चिन्ह नहीं होते हैं। जिनको केवल जैन प्रतिमाएं ही कहा जाता है। कुछ प्रतिमाओं की चौकी पर शिलालेख हैं। जिससे उनके स्थापित किए जाने की तिथि तथा प्रतिष्ठा कराने वाले का नाम अंकित है।

अन्य प्रतिमाओं की दीर्घा :—

२१वें कक्ष से २८वें कक्ष तक अन्य हिन्दू देवताओं की प्रतिमाएं प्रदर्शित की गई हैं। २६वें कक्ष में पुराना शासकीय रेकार्ड है तथा २७वें

कक्ष में संस्कृत एवं फारसी शिलालेख हैं। जिनके सम्बन्ध में पूर्व में लिखा जा चुका है। २१वें कक्ष में गरुड़-वाहन विष्णु की प्रतिमा विशेष महत्व की है। इस पत्थर पर काली चमकदार पॉलिश की हुई है तथा इसके नीचे संस्कृत का लेख भी है। इसी कक्ष में सीता-राम की प्रतिमा है। इस संग्रहालय में सीता-राम की प्रतिमा एक ही है। सीता-राम के मन्दिर भी अधिक नहीं मिलते हैं। २२वें कक्ष में गजासुर वध की प्रतिमा का विशेष स्थान है। इसमें भगवान शिव रुद्ररूप धारण कर गजासुर का वध करते हुए दिखलाये गये हैं। शिव की आकृति भयंकर, क्रोधपूर्ण बतलाई गई है, तथा गले में मुण्डों की माला और शिर के समीप गजासुर का मुख दर्शाया गया है। इसके उपरांत गणेश दीर्घा में प्रवेश करना पड़ता है। इसमें नृत्यमग्न गणेश तथा गणेश की शक्ति दिखलाई देती है। इसी में भूत की पति-पत्नी की प्रतिमा हैं। जिनको देखकर यह मानना पड़ता है कि प्राचीनकाल में कलाकार केवल देवताओं की प्रतिमाएं ही नहीं बनाते थे, किन्तु कला के लिए भी कार्य करते थे। इसके बाद २४ नंबर की दीर्घा आती है। इस दीर्घा में सरस्वती तथा त्रिमूर्त्ति की प्रतिमाएं अत्यन्त कलापूर्ण हैं। दीर्घा नंबर २५ में प्रतिमाओं के शिर हैं, जिनको अलमारियों में रखा गया है। समीप में मल्लयुद्ध का दृश्य प्रदर्शित है। यहां पर दो बेंचें दर्शकों के विश्रामार्थ रखी गई हैं। सबसे अंत में २८ नंबर की दीर्घा आती है। इसमें अधिकतर सुहानिया नामक स्थान से लाई गई प्रतिमाएं प्रदर्शित हैं। सुहानिया का प्राचीन नाम 'सिंहपानीय' था। इस स्थान पर मध्यकाल की प्रतिमाएं मिलती हैं। उनमें कुछ इस संग्रहालय में प्रदर्शित हैं। दीर्घा नंबर २८ के प्रवेश द्वार के समीप एक बहुत ही भव्य प्रतिमा रखी है, जिसमें मृगया (आखेट) का सजीव चित्रण किया गया है। उक्त समस्त दीर्घाओं में पर्यटन करने के पश्चात दर्शक उस स्थान पर पहुंचते हैं, जहां दर्शक पुस्तिका रखी हुई है, जिस पर दर्शकगण अपना अभिप्राय लिखते हैं।

सिक्के (मुद्राएं):—

इस संग्रहालय में अनेक प्रकार की स्वर्ण, रजत, ताम्र एवं मिश्र धातुओं की मुद्राएं भी पर्याप्त संख्या में हैं; किन्तु स्थानाभाव के कारण सब मुद्राएं प्रदर्शित करना असम्भव है। संग्रहालय के संग्रह में सिक्के ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी से लेकर १८वीं ई० शताब्दी तक के हैं। पद्मावती के नाग राजाओं की मुद्राओं का विशेष संग्रह भी है, जिसका केटलॉग डॉ० एच० व्ही० त्रिवेदी, उप-संचालक, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, मध्य प्रदेश शासन द्वारा लिखित, प्रकाशित किया जा चुका है और जिसकी प्रतियां संग्रहालय से मूल्य देकर प्राप्त की जा सकती हैं।

शेषशायी विष्णु

(धातु-प्रतिमा)